प्राचीन भारतीय शिक्षा में सीखने–सिखाने की विधियाँ और वर्तमान समय में उपादेयता।

शोधार्थी	मार्गदर्शक
गोहेल भाविका वल्लभभाई	डॉ. राकेश पटेल
चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी,	चिल्ड्रन्स रिसर्च युनिवर्सिटी,
छ–५, गांधीनगर, गुजरात	छ–५, गांधीनगर, गुजरात

❖ Abstract :

हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे दिलचस्प और महत्वपूर्ण संस्कृतियों में से एक है। इस संस्कृति के समुचित ज्ञान के लिए प्राचीन शिक्षण पद्धति का अध्ययन करना आवश्यक है। प्राचीन भारतीय लोग शिक्षा को बहुत महत्व देते थे। वैदिक काल से ही ज्ञान को प्रकाश का स्रोत माना जाता रहा है। जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को प्रकाशित कर उसे सही दिशा प्रदान करते है।

प्राचीन भारतीयों का दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा और विकसित बुद्धि के माध्यम से प्राप्त ज्ञान ही मनुष्य की असली ताकत है। उनके अनुसार शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का साधन है। इसका उद्देश्य न केवल किताबी ज्ञान प्राप्त करना था, बल्कि मानव स्वास्थ्य का विकास करना भी था। हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली नैतिकता से परिपूर्ण थी। मनुस्मृति में उल्लेख है कि सभी वेदों को जानने वाला विद्वान भी अच्छे चरित्र के अभाव में महान नहीं है, लेकिन जो व्यक्ति केवल गायत्री मंत्र जानता है वह भी अच्छे चरित्र के कारण महान है।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के साथ–साथ नैतिकता, शिष्टाचार और चरित्र जैसे महान गुणों के विकास को बढ़ावा देती थी।

❖ Keyword :

वैदिक युग, बौद्ध युग, सीखने–सिखाने की विधि, आश्रम जीवन शैली, संगोष्ठी विधि, सम्मेलन, संथा विधि, व्याख्यान विधि, प्रश्न विधि, प्रत्यक्ष शिक्षण विधि, यात्रा, कथा विधि, चिंतन और निदिध्यासन, नायकीय शिक्षा विधि ।

❖ प्राचीन भारतीय शिक्षा को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(1)वैदिक युग (2) बौद्ध युग

❖ वैदिक युग :

वैदिक युग में शिक्षा को दो प्रकारों में विभाजित किया गया है।

- प्रारंभिक शिक्षा–5 वर्ष
- उच्च शिक्षा– 8वीं से 12वीं

वैदिक शिक्षा के उद्देश्यों में ब्रह्मज्ञान, जीवन शिक्षा, आध्यात्मिक विकास, नैतिक और चारित्रिक विकास, संस्कृति की रक्षा और विकास, व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ संयम और सदाचार शामिल थे।

उपरोक्त शैक्षिक उद्देश्यों को साकार करने के लिए शिक्षा में निम्नलिखित शिक्षण विधियों का उपयोग किया गया।

❖ **शिक्षा की वैदिक प्रणाली :**

वैदिक काल में शिक्षा मुख्यतः मौखिक थी। इसके अलावा शंका–निवारण, व्याख्यान और वाद–विवाद से भी शिक्षा मिलती थी। उस समय भाषा सीखने के लिए अनुकरण तथा कला–कौशल के ज्ञान के लिए प्रदर्शन एवं अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया जाता था। उपनिषकारों ने शिक्षण की एक बहुत प्रभावशाली विधि विकसित की, जिसे श्रवण, मनन और निदिध्यासन विधि कहा जाता है।

(1) आश्रम जीवन शैली :

किसी शिष्य को गुरु के घर या गुरुकुल में रखने का मूल कारण यह था कि चरित्रवान गुरुओं के साथ रहकर शिष्य भी गुरु के समान अपना चरित्र और जीवन प्राप्त कर सकेंगे। शिक्षक हमेशा बच्चो के लिए एक आदर्श होता है। छात्र गुरुओं और गुरुमाताओं के साथ रहते हैं, उनके जीवन को देखते हैं और सहजीवन के माध्यम से जीने और आध्यात्मिकता प्राप्त करने का ज्ञान प्राप्त करते हैं। गुरु का सानिध्य एवं आश्रम जीवन ही वैदिक शिक्षा की मुख्य पद्धति है। आश्रम का वातावरण ही विद्यार्थी के जीवन को आकार देता है।

(2) संगोष्ठी विधि :

अनेक विद्यार्थी एक ही विषय पर व्याख्यान देते हैं, प्रश्न पूछते हैं, उत्तर देते हैं, चर्चा करते हैं – यही संगोष्ठी पद्धति है। वैदिक शिक्षा में संगोष्ठी पद्धति का प्रचुर विनियोग है।

इस विधि से किसी भी विषय पर गहराई से सोचने की शक्ति तथा अभिव्यक्ति की शक्ति का विकास होता है। उपनिषदों की रचना ऐसे ही तर्क–वितर्कों का परिणाम है।

(3) संमेलन :

स्थानीय परिषदों के अलावा कभी–कभी बड़े–बड़े राजा देश भर से विद्वानों, साधु–संतों और वक्ताओं को भी आमंत्रित करते थे। मेधावी और उत्कृष्ट विद्वानों, वक्ताओं, दार्शनिकों और संतों को भी विशेष पुरस्कार दिए जाते थे।

(4) संथा विधि :

वैदिक मंत्रों को गुरु के मुख से सुनकर सीखना होता है, गुरु वेद मंत्रों को शुद्ध उच्चारण के साथ जपता है, शिष्य एकाग्रता के साथ उन्हें सुनता है और आत्मसात करता है, फिर शिष्य उच्चारण करता है और यदि कोई गलती हो तो गुरु उसे सुधारते हैं इस प्रकार गुरु वेद का एक मंत्र शिष्य को सिखाते हैं। यह शब्दांश सुनने की विधि है। इस विधि को संथा विधि कहा जाता है।

(5) व्याख्यान विधि :

वैदिक शिक्षा में व्याख्यान प्रणाली एक महत्वपूर्ण पद्धति थी। वहाँ कोई किताबें नहीं थीं, केवल पांडुलिपियाँ थीं। इसलिए गुरु विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देते थे और छात्र उन व्याख्यानों को एकाग्रता से सुनते थे – यह ज्ञान प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत था।

गुरुकुल के मुखिया गुरुदेव तो व्याख्यान देते थे, परंतु इसके अतिरिक्त वरिष्ठ विद्यार्थियों, अतिथिगणों, ऋषियों द्वारा भी व्याख्यान कराने की परंपरा थी। आज इस परंपरा को अतिथि वक्ताओं या विजिटिंग प्रोफेसरों की परंपरा के समान ही माना जा सकता है।

(6) प्रश्न विधि :

विद्यार्थी जिज्ञासावश प्रश्न पूछते हैं और शिक्षक उत्तर देते हैं, इसे प्रश्नोत्तरी विधि कहते हैं। इस विधि को संवाद विधि भी कहा जाता है। हमारे उपनिषद ऐसे आध्यात्मिक संवादों से भरे पड़े हैं। यह प्रश्नोत्तरी पद्धति वैदिक शिक्षा में एक मूल्यवान शिक्षण पद्धति थी।

(7) प्रत्यक्ष शिक्षण विधि :

जो शिक्षा स्वयं करके होती है उसे प्रत्यक्ष शिक्षा कहते हैं। वेदकाल में छात्र गाय पालते थे और गोपालन सीखते थे; विद्यार्थी यज्ञ करते थे और यज्ञ विद्या सीखते थे; छात्र आकाश का अवलोकन करते थे और खगोल विज्ञान सीखते थे; छात्र खाना पकाते थे और खाना बनाना सीखते थे। इस प्रकार प्रत्यक्ष शिक्षण पद्धति से विद्यार्थी अनके कौशल अर्जित करते थे।

(8) शिक्षण निवास :

एक आश्रम का प्रौढ़ विद्यार्थी दूसरे आश्रम में जाकर वहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे– यही शिक्षा निवास व्यवस्था है। आज भी कुछ विधालायो में यह पद्धति जारी है।

वर्तमान में प्राइमरी स्कूलों में चल रहा ट्यूनिंग प्रोग्राम भी कुछ इसी तरह का है। इस प्रकार विद्यार्थियों की जीवन दृष्टि व्यापक हो जाती है और उनकी शिक्षा में रह गयी कमियाँ भी पूरी हो जाती हैं।

(9) यात्रा :

यात्रा जीवन विकास का एक साधन है। वैदिक शिक्षा में यह परम्परा थी कि विद्यार्थी की शिक्षा तब तक अधूरी मानी जाती थी जब तक वह आर्यावर्त यात्रा पूरी न कर ले। इसलिए वेदकाल में केवल विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि सभी लोग खूब तीर्थयात्रा करते थे।

ये यात्राएँ रथों, घोड़ों या गाड़ियों में बैठकर की जाती थीं, लेकिन विद्यार्थी यह यात्रा अधिकतर पैदल ही करते थे।

(10) कहानी विधि :

उत्तरी वैदिक काल में विष्णु शर्मा ने राजकुमारों को संस्कार सिखाने के लिए कहानियों की रचना की। ये कहानियाँ पंचतंत्र और हितोपदेश नाम से संकलित हैं। कथा सुनने के बाद आचार्य शिष्यों से प्रश्न पूछते थे, इन प्रश्नों में अंतिम प्रश्न होता था कि कथा क्या सिखाती है? इस प्रकार मूल्य शिक्षा के लिए यह कहानी पद्धति बहुत लोकप्रिय हुई।

(11) चिंतन–मनन और निदिध्यासन:

वेद मंत्रों के अर्थ, वेदांत आदि दर्शन और अध्यात्म के तत्वों पर चिंतन और निदिध्यासन किया जाता है। यह भी शिक्षा की एक पद्धति थी। अंततः, शिक्षा केवल चेतना की क्रांति के लिए है, इसलिए जब तक ज्ञान चेतना में समाहित न हो जाए तब तक शिक्षा अधूरी है। इस प्रकार चिंतन और निदिध्यासन भी वैदिक शिक्षा की मूल्यवान पद्धतियाँ थीं।

❖ बौद्ध युग:

बौद्ध काल में बौद्ध भिक्षुओं द्वारा शिक्षा की एक नई प्रणाली विकसित की गई, जिसे बौद्ध शिक्षा प्रणाली कहा जाता है।

बौद्ध शिक्षा प्रणाली को तीन स्तरों में विभाजित किया गया था।

(1)प्राथमिक शिक्षा–6 वर्ष से 12 वर्ष तक

(2) उच्च शिक्षा–12 वर्ष से प्रारंभ होकर 20–25 वर्ष तक

(3) उपसम्पदा संस्कार के साथ–साथ भिक्षु शिक्षा– उच्च शिक्षा पूरी करने के बाद भिक्षु बनना

❖ बौद्ध शिक्षा के मुख्य उद्देश्य:

- मानव सभ्यता का संरक्षण एवं विकास।
- बौद्ध धर्म का प्रचार एवं प्रसार करना।

- चरित्र निर्माण।
- कला–कौशल और व्यापार सिखाना।
- सर्वांगी विकास करना।
- बौद्ध धर्म की शिक्षा देना।

इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित शिक्षण विधियों का उपयोग किया गया।

❖ बौद्धकालीन शिक्षण विधियाँ:

(1) व्याख्यान विधि :

उच्च शिक्षा के विद्यार्थियों के ज्ञान को स्पष्ट करने, शंकाओं के समाधान हेतु विशेष प्रकार के व्याख्यानों का आयोजन किया जाता था। इसके लिए उच्च शिक्षा केन्द्र में एक विषय विद्वान को बुलाया जाता था। विद्यार्थियों की समस्या शंकाओं के बारे में व्याख्यान दिए जाते हैं और चर्चा की जाती थी ।

(2) प्रश्नोत्तर विधि :

अर्थघटन के लिए प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग किया जाता था। इस पद्धति का उपयोग शंका समाधान, विषयों को समझने और समझाने, जिज्ञासा जगाने आदि के लिए किया जाता था।

(3) विवाद एवं तर्क विधि :

इस पद्धति का प्रयोग विवादास्पद विषयों को पढ़ाने के लिए किया जाता था। अपनी बात को सिद्ध करने के लिए आठ प्रकार के प्रमाणों का प्रयोग किया जाता है। सिद्धांत, प्रयोजन, उदाहरण, समानता, विरोधाभास, प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम।

(4) नायकिय शिक्षा प्रणाली :

प्राचीन भारत की महत्वपूर्ण प्रणालियों में से एक थी नायकिय शिक्षा प्रणाली। इसे अग्र–शिष्य पद्धति भी कहा जाता है। गुरु की आज्ञा से कक्षा का प्रबुद्ध विद्यार्थी अपने से कनिष्ठ विद्यार्थियों को पढ़ाता था। गुरु शिष्यों को शिक्षा का उत्तरदायित्व सौंपते थे।

(5) चिंतन विधि :

यह पद्धति धर्म एवं अध्यात्म विषय के लिए अपनाई गई थी। इस विधि से अंतर्ज्ञान प्राप्त होता था।

(6) सम्मेलन विधि :

पूर्णिमा और प्रतिपदा के दिन संघ के सभी शिक्षक और छात्र एकत्रित होकर ज्ञान और धर्म पर चर्चा करते थे। उसे सम्मलेन विधि कहते थे।

(7) परिसंचरण विधि :

यह विधि मुख्यतः भिक्षुक शिक्षा के लिए उपयोगी थी। भिक्षुक को घूमने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था, जिससे वह वास्तविक दुनिया से परिचित हो जाता था, मानव समाज की वास्तविक स्थिति से अवगत हो जाता था और धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए भी ज्ञान दिया जाता था।

प्राचीन बौद्ध काल में शिक्षण एवं अध्ययन के लिए इस पद्धति का प्रयोग किया जाता था।

❖ **वर्तमान समय में प्राचीन भारतीय शिक्षा की सीखने-सिखाने की विधियों की उपादेयता।**

वैदिक काल में शिक्षण सामान्यतः मौखिक रूप से होता था और प्रायः प्रश्नोत्तर, शंका-समाधान, व्याख्यान और वाद-विवाद द्वारा होता था। उस समय भाषा की शिक्षा के लिए अनुकरण विधि और कला-कौशल की शिक्षा के लिए प्रदर्शन एवं अभ्यास विधियों का प्रयोग किया जाता था।

उपनिषदकारों ने शिक्षण की एक बहुत प्रभावी विधि का विकास किया था जिसे श्रवण, मनन और निदिध्यासन विधि कहते हैं। उत्तर वैदिक काल में छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए कहानी विधि और उच्च स्तर के शिष्यों के लिए तर्क विधि का विकास किया गया। ऐसा प्रतीत होता है कि उस काल के गुरु मनोविज्ञान के पंडित थे। यहाँ हम उपयुक्त विधियों की वर्तमान समय में उपादेयता स्पष्ट करेंगे।

❖ **आश्रम (छात्रालय) जीवनशैली :**

वर्तमान समय में आश्रम जीवन शैली अपनाने से विद्यालयों में शिक्षकों और छात्रों के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित कर सकते है। वे एक साथ रहकर, एक साथ काम कर सकते हैं, अपने विचार साझा कर सकते हैं और एक-दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध बन सकते हैं। इस तरह विद्यार्थियों का सर्वांगी विकास हो सकता है।

आश्रम (छात्रालय) जीवनशैली में औपचारिक शिक्षा के अलावा, शारीरिक गतिविधियों, ध्यान, दर्शनीय स्थलों की यात्रा, खेल और अन्य पाठ्येतर गतिविधियों, जैसे, खेल, पेंटिंग, हस्तशिल्प, संगीत और नृत्य पर भी जोर दिया जा सकता है।

❖ **अनुकरण एवं कण्ठस्थ विधि :**

अनुकरण विधि सीखने की स्वाभाविक विधि है। वर्तमान प्रारंभिक शिक्षा में भाषा सीखने के लिए इस विधि का प्रयोग कर सकते हैं। भाषा का स्पष्ट उच्चारण सीखने में, शुद्ध लेखन कार्य सीखने में और नई स्किल सीखने में अनुकरण विधि उपयोगी हो सकती है। संख्या ज्ञान सीखने में यह विधि उपयोगी हो सकती है।

अनुकरण विधि का प्रयोग यंत्र विज्ञान और इंजीनियरिंग विभाग में कर सकते हैं। यज्ञ विधि–विधान के श्लोक सीखने के लिए इस विधि का प्रयोग कर सकते हैं ।

❖ **दृष्टान्त विधि :**

दृष्टांत विधि में दृष्टांत दृश्य भी हो सकते हैं और श्राव्य भी। इस विधि में चित्र, मानचित्र, चित्रपट आदि के सहारे वस्तु का स्पष्टीकरण किया जाता है। साथ ही उपमा, उदाहरण, कहानी, चुटकुले आदि के द्वारा भी विषय का स्पष्टीकरण हो सकता है।

❖ **व्याख्यान विधि :**

वस्तु एवं दृष्टांत विधियों से ज्ञान प्राप्त करते करते जब बच्चों को कुछ–कुछ अनुमान करने तथा अप्रत्यक्ष वस्तु को भी समझने का अभ्यास हो जाता है, तब व्याख्यान विधि का सहारा लिया जाता है। इसमें वर्णन के द्वारा छात्रों को पाठ्यवस्तु का ज्ञान दिया जाता है। व्याख्यान विधि पाठ्यवस्तु को समझाने के लिए सहायक है। लंबा पाठ्यवस्तु कम समय में पूर्ण करने के लिए व्याख्यान विधि उपयोगी है। उच्च कक्षाओं में प्राय: व्याख्यान विधि का ही प्रयोग लाभदायक है।

❖ **प्रदर्शन एवं अभ्यास विधि :**

कृषि, पशुपालन, कला–कौशल और विज्ञान आदि क्रिया प्रधान विषयों की शिक्षा प्रदर्शन और अभ्यास विधि से दी जा सकती है। शिक्षक सर्वप्रथम क्रिया के संपादन की विधि बताते हैं और फिर उसे स्वयं करके दिखाते है, शिष्य उनका अनुकरण कर यथा क्रिया का अभ्यास कर के और धीरे–धीरे उसमें दक्षता प्राप्त करने का प्रयास करेंगे। इस प्रकार प्रदर्शन एवं अभ्यास विधि वर्तमान शिक्षा में भी उपयोगी है।

❖ **प्रश्नोत्तर विधि :**

इस विधि में प्रश्नकर्ता से ही प्रश्न किए जाते हैं और उसके उत्तरों के आधार पर उसी से प्रश्न करते–करते अपेक्षित उत्तर प्राप्त किया जाता है।

शिक्षक विद्यार्थियों से प्रश्न पूछकर अपने पाठ का विकास करता है। वह पूर्वज्ञान से सम्बन्धित प्रश्न पूछता है तथा शिक्षण बिंदुओं के साथ भी प्रश्न पूछता हुआ आगे बढ़ता है। इस प्रविधि में प्रश्नों एवं उत्तरों की प्रधानता होने के कारण ही इसे प्रश्नोत्तर प्रविधि कहा जाता है।

इस प्रविधि में शिक्षक प्रश्न इस प्रकार से पूछता है कि विद्यार्थियों में रुचि एवं जिज्ञासा बनी रहे। वह कक्षा के सहयोग से ही उत्तर ढूंढने का प्रयास करता है एवं शंका का समाधान करता है।

शिक्षक इस प्रकार प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग करके वर्तमान समय में शैक्षणिक कार्य असरकारक रूप से कर सकता है ।

❖ **श्रवण, मनन, निदिध्यासन विधि :**

यह विधि उपनिषदकारों की देन है। उस काल में गुरु जो भी व्याख्यान देते थे, वेद मन्त्रों आदि की जो भी व्याख्या करते थे, धर्म, दर्शन एवं अन्य विषयों के सम्बन्ध में जो कुछ जानकारी देते थे, शिष्य उनको ध्यानपूर्वक सुनते थे, उसके बाद

उस पर मनन करते थे, चिन्तन करते थे और जो तथ्य एवं सत्य का ज्ञान होता था और उस पर नियमित रूप से अभ्यास करते थे।

कक्षा में विद्यार्थियों को शिक्षक द्वारा दिया गया ज्ञान वह अच्छी तरह से श्रवण करें और उस पाठ्यवस्तु पर चिंतन और मनन करके अपने जीवन में उपयोगी कौशल और सद्व्यवहार सीखने में श्रवण, मनन, निदिध्यासन विधि उपयोगी हो सकती है।

❖ **तर्क विधि–**

इस विधि को चर्चा विधि के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली बाल केंद्रित है। आज यह आवश्यक है कि विद्यार्थी कक्षा में अधिक से अधिक सक्रिय रहे अर्थात् विद्यार्थी को कक्षा शिक्षण के समय अपने शिक्षक के साथ तथा अन्य साथियों के साथ विषय से सम्बन्धित परस्पर बातचीत करनी चाहिए। विद्यार्थी कक्षा में मात्र एक निष्क्रिय श्रोता नहीं है। इसलिए कक्षा में विषय से सम्बन्धित बातचीत या वाद विवाद अब शिक्षा का एक आवश्यक और लोकतान्त्रिक अंग माना जाने लगा है। यह विधि छात्रों को अपने विचारों को कहने, सुनने, शंकाओं का निवारण करने एवं प्रश्न पूछने आदि का पूरा अवसर प्रदान करती है। जिससे वे शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग ले सके। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वाद – विवाद विधि शिक्षण की वह विधि है, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी परस्पर मिलकर किसी प्रकरण, प्रश्न या समस्या के सम्बन्ध में स्वतंत्रता पूर्वक सामूहिक वातावरण में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।

❖ **कहानी विधि–**

कहानी–कथन प्रविधि भाषा शिक्षण की प्राथमिक स्तर पर बड़ी उपयोगी प्रविधि है, क्योंकि बच्चो को कहानी सुनने का बड़ा शौक होता है। कहानी के माध्यम से बच्चे आनंद उल्लास के साथ सीख सकते हैं । बच्चों में सत्य, अहिंसा, करुणा, परोपकार जैसे नैतिक मूल्यों का विकास सरलता से हो जाता है ।

अत: कहानी के माध्यम से उन्हें कोई भी ज्ञान बड़ी सरलता से दिया जा सकता है। भाषा की विषयवस्तु का ज्ञान भी उन्हें कहानियों के माध्यम से दिया जा सकता है। शिक्षक को कहानी कहने एवं बनाने की कला में निपुण होना चाहिये।

❖ सारांश :

'सा विद्या या विमुक्तये' का अर्थ है 'विद्या वही है जो मुक्ति दिलाए'। प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली जो मुक्ति और मोक्ष की चरम प्राप्ति की ओर ले जाती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली अत्यंत समृद्ध एवं उत्कृष्ट थी। इसीलिए प्राचीन भारत को विश्व गुरु का दर्जा दिया गया है, उस समय की शिक्षा ने न केवल मनुष्य को जीवन जीने का सार्थक तरीका सिखाया, बल्कि छात्रों को दुनिया की समस्याओं का सामना करने और अंततः मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग भी दिखाया।

बच्चो की प्रारंभिक शिक्षा मनुष्य और मानवता के समग्र विकास का सबसे महत्वपूर्ण चरण है। यह किसी व्यक्ति के जीवन की प्रारंभिक अवधि है। बच्चों को प्रासंगिक

विचारों, कौशल और आदतों की एक प्रणाली के संपर्क में लाना शामिल है जो उन्हें उनकी भविष्य की भूमिकाओं के लिए परिष्कृत कर सकते हैं।

शिक्षक को मिलनसार, रचनात्मक और शारीरिक रूप से सक्रिय होना चाहिए। उसे प्रत्येक बच्चे का सम्मान करना चाहिए और उसकी शिक्षण तकनीकों को बेहतर बनाने के तरीके तलाशने चाहिए। प्राचीन शिक्षा विधियों का वर्तमान शिक्षा मे विनियोग करके शिक्षा को ओर बहेतर बनाकर बच्चों का सर्वांगी विकास कर सकते है।

❖ संदर्भ :

1) प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली, डॉ. बच्चा भारती, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी, 2001

2) प्राचीन शिक्षा पद्धति, डॉ. सुरेंद्र झा, आशुतोष प्रकाशन, लखनऊ, 2004

3)वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2000

4) धर्मशास्त्र का इतिहास, पी.वी.काणे (भाग १), हिंदी समिति, लखनऊ, 2000

5) कोडियुं, भानदेवजी, सितंबर, 2019, ग्राम दक्षिणामूर्ति, आमला, भावनगर